ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2017; 3(8): 934-936
www.allresearchjournal.com
Received: 21-06-2017
Accepted: 23-07-2017

डा. सीमा सिंह
राजनीति विज्ञान विभाग, आगरा कालेज, आगरा, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
डा. सीमा सिंह
राजनीति विज्ञान विभाग, आगरा कालेज, आगरा, उत्तर प्रदेश, भारत

वैश्वीकरण के दौर में गांधीजी के आर्थिक विचारों की प्रासंगिकता

डा. सीमा सिंह

सारांश
वर्तमान समय में भूमंडलीकरण का प्रभाव प्रत्येक राष्ट्र पर है। भारत भी उससे अछूता नहीं है। अब उपनिवेशवाद का स्थान नव उपनिवेशवाद ने ले लिया है। उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण की व्यवस्था ने विश्व व्यापार के लिए द्वार खोल दिए परंतु इस व्यवस्था में साधारण जनमानस पिछड़ गया। इस कारण गरीबी, बेरोजगारी और निर्भरता से संबंधित अनेक समस्याएं उत्पन्न हुई। वैश्विक स्तर पर व्याप्त हिंसा, मतभेद, बेरोजगारी, महंगाई तथा तनावपूर्ण वातावरण में आज बार–बार यह प्रश्न उठाया जा रहा है कि गांधी जी के सत्य, अहिंसा पर आधारित दर्शन और विचारों की कितनी प्रासंगिकता है। इस समय वैश्विक अर्थव्यवस्था के समय में महात्मा गांधी के विचारों का महत्व और अधिक बढ़ जाता है। गांधी जी को वैश्विक समाज की समझ इसलिए थी क्योंकि उन्होंने इंग्लैंड में उच्च शिक्षा प्राप्त की थी और दक्षिण अफ्रीका में राजनीतिक संघर्ष की दिशा प्राप्त की थी गांधीजी की कही बातों में एक सदी का अंतर दिखाई देता है परंतु उनके विचार आज भी जीवंत माने जाते हैं।

कूटशब्द : स्वराज, वैश्वीकरण, पूंजीवाद, आर्थिक विकेन्द्रीकरण, स्वदेशी, कुटीर उद्योग धंधे

प्रस्तावना:
बीसवीं सदी के उत्तरार्ध में अंतर्राष्ट्रीय राजनीतिक, आर्थिक व्यवस्था में आमूलचूल परिवर्तन की शुरुआत हुई। शीत युद्ध के अंत, सोवियत संघ के विघटन, जर्मनी के एकीकरण और एक ध्रुवीय विश्व व्यवस्था ने विश्व को नई विश्व व्यवस्था की ओर धकेला। इन तमाम परिवर्तनों में वैश्वीकरण एक प्रमुख प्रवृत्ति है। साम्यवादी रूस के पतन के साथ ही वैश्विक अर्थव्यवस्था पर पूंजीवादी विचारधारा का प्रभुत्व हो गया। 1964 में कनाडा के मार्शल मैक्लुहान ने आधुनिक संचार तकनीकी के कारण विश्व को ''वैश्विक गांव'' की संज्ञा दी थी।
वैश्वीकरण एक बहुआयामी प्रक्रिया है जिसने राष्ट्रों के आपसी संबंधों, उनकी बाह्य प्रमुखताओं तथा आंतरिक नीतियों को गंभीरता से प्रभावित किया है। वैश्वीकरण का तात्विक आधार कुछ भी हो लेकिन उसका प्रभाव वर्तमान में विश्व के राजनीतिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक सभी क्षेत्रों में देखा जा सकता है। उदारीकरण व निजीकरण के बिना वैश्वीकरण संभव नहीं है। उदारीकरण का तात्पर्य है कि अर्थव्यवस्था और समाज कल्याण के क्षेत्रों में राज्य के नियंत्रण को कम करके उसे उदार बनाया जाए। इसी तरह निजीकरण का तात्पर्य है कि सामाजिक और आर्थिक जीवन में निजी क्षेत्र की भूमिका तथा हिस्सेदारी को बढ़ाया जाए। वैश्वीकरण का झुकाव पूंजीवादी अर्थव्यवस्था की ओर है। निजीकरण और उदारीकरण को विश्व स्तर पर फैलाने का एक प्रमुख साधन वैश्वीकरण है।

उद्देश्य : प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य वैश्वीकरण से उत्पन्न समस्याओं के समाधान में गांधीजी के आर्थिक विचारों की प्रासंगिकता का विस्तार पूर्वक विवेचन करना है।

ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी के अनुसार, ''वैश्वीकरण शब्द का प्रयोग सबसे पहले 'Towards Non-Education' नामक दस्तावेज में किया गया था जिसका प्रकाशन 1930 में हुआ था। 19 वीं सदी के अंतिम वर्षों में तकनीकी साधनों के द्वारा राष्ट्रों के मध्य विभिन्न क्षेत्रों में आदान प्रदान की प्रक्रिया तेजी पकड़ने लगी तथा इससे जुड़े हुए बदलाव की व्याख्या करने के लिए वैश्वीकरण एक लोकप्रिय शब्द बन गया। सामान्य अर्थों में वैश्वीकरण का तात्पर्य एक ऐसी प्रक्रिया से है जिसके अंतर्गत राष्ट्रीय समुदायों के मध्य वस्तुओं, सेवाओं, पूंजी, व्यक्तियों तथा विचारों का आदान–प्रदान अंतः क्रिया में तीव्र वृद्धि होती है। वर्तमान समय में वैश्वीकरण की सबसे व्यापक अभिव्यक्ति आर्थिक क्षेत्र में हुई है। आर्थिक संदर्भ में इसका तात्पर्य राष्ट्रों के बीच सेवाओं, पूंजी, वस्तुओं तथा श्रम का आदान–प्रदान बढ़ाने के लिए बाधाओं को कम करने या दूर करने से है।

1991 में वित्तीय संकट से उबरने और आर्थिक वृद्धि की दर ऊंची हासिल करने की इच्छा से भारत में आर्थिक सुधार की योजना शुरू हुई। वैश्वीकरण से आर्थिक विकास को गति मिली है। भारतीय अर्थव्यवस्था विश्व की सबसे तेजी से उभरती अर्थव्यवस्थाओं में से एक है। रोजगार के नए अवसरों का सृजन हुआ है। लोगों की प्रति व्यक्ति आय व जीवन स्तर में वृद्धि हुई है। सभी विकसित एवं विकासशील देश भारत के साथ व्यापार करने के इच्छुक हैं।

वैश्वीकरण का प्रभाव सभी देशों में एक जैसा नहीं है तकनीकी प्रतियोगिता करने में सक्षम देशों को वैश्वीकरण एक नए अवसर प्रदान करता है, लेकिन जिन देशों में यह प्रतियोगिता नहीं है उनके लिए एक चुनौती है तथा वे उसके नकारात्मक प्रभावों से पीड़ित हैं। वे देश असमानता, गरीबी, बेरोजगारी, खाद्य सुरक्षा तथा प्राकृतिक आपदाओं के नकारात्मक प्रभाव का सामना कर रहे हैं। वैश्वीकरण के युग में राष्ट्र एक दूसरे से अवश्य जुड़े हैं लेकिन उनका मूल उद्देश्य निजी राष्ट्रीय हितों की प्राप्ति है ना कि वैश्विक समस्याओं का प्रभावी समाधान।

वर्तमान समय में भूमंडलीकरण का प्रभाव प्रत्येक राष्ट्र पर है। भारत भी उससे अछूता नहीं है। अब उपनिवेशवाद का स्थान नव उपनिवेशवाद ने ले लिया है। उदारीकरण निजीकरण और वैश्वीकरण की व्यवस्था ने विश्व व्यापार के लिए द्वार खोल दिए परंतु इस व्यवस्था में साधारण जनमानस पिछड़ गया। इस कारण गरीबी, बेरोजगारी और निर्धनता से संबंधित अनेक समस्याएं उत्पन्न हुई हैं।

गांधी जी ने सत्य और अहिंसा के सिद्धांतों के आधार पर मानवता को समाज के नव निर्माण की नई राह दिखाई। मैकियावली ने राजनीति और नैतिकता के बीच दीवार खड़ी करते हुए तर्क दिया था कि यदि साध्य उचित हो तो साधन अपने आप उचित मान लिया जाएगा। इसके विपरीत गांधी जी ने राजनीति और नैतिकता के बीच पुल का निर्माण करते हुए यह तर्क दिया कि राजनीति के क्षेत्र में साधन और साध्य दोनों समान रूप से पवित्र होने चाहिए। गांधी जी का पूर्ण विश्वास था कि यदि अर्थशास्त्र को नैतिक आधार पर प्रतिष्ठित कर दिया जाए और लाभ की इच्छा पर न्याय भावना को प्रोत्साहन दिया जाए तो आधुनिक युग के अनेक गंभीर दोष दूर हो जाऐंगें।

गांधीजी समाज में व्याप्त आर्थिक विषमता को मिटाना चाहते थे। इसको दूर करने के लिए उन्होंने ट्रस्टीशिप सिद्धांत दिया। इसका अर्थ है कि धनी व्यक्ति अपने पास उतनी ही संपत्ति रखेगा जिससे उसकी आवश्यकता की पूर्ति हो जाए। उससे अधिक संपत्ति को अपने पास वो समाज की धरोहर समझेगा व उसका प्रयोग समाज के कल्याण के लिए करेगा। वैश्वीकरण से आर्थिक विकास को गति तो मिली है लेकिन साथ ही निजीकरण एवं पूंजीवाद को प्रोत्साहन मिलने के कारण आर्थिक असमानतायें भी बढ़ी हैं। जहां अरबपतियों की संख्या बढ़ी है वहां गरीबों की संख्या में भी वृद्धि हो रही है। अमीर और अधिक अमीर हो रहे हैं और गरीब और अधिक गरीब हो रहे हैं। निजी कंपनियां एवं निजी उद्योगपति केवल अपने लाभ के लिए काम करते हैं एवं गरीबों का शोषण हो रहा है। वर्तमान समय में यदि पूंजीपति इस सिद्धांत के अनुसार आचरण करें तो निश्चय ही व्यक्ति का व्यक्ति के द्वारा शोषण बंद हो जाएगा और यदि राष्ट्र इस सिद्धांत की भावना को अपनाएं तो राष्ट्रों के बीच असमानतायें कम होने लगेंगी व युद्ध के कारण भी कम हो जाएंगे।

नई प्रौद्योगिकी से उत्पादन तो बड़ा है लेकिन रोजगार में वृद्धि नहीं हुई है। भारत जैसे विशाल जनसंख्या वाले देश में मानव संसाधन प्रचुर मात्रा में है लेकिन नई प्रौद्योगिकी ने श्रमिकों को फालतू बना दिया है, इससे बेरोजगारी में वृद्धि हुई है। इस वातावरण में गांधी जी की आर्थिक विकेंद्रीकरण व कुटीर उद्योग धंधों की नीति मार्ग दिखा सकती हैं। गांधी जी ने राजनीतिक विकेंद्रीकरण की तरह आर्थिक विकेंद्रीकरण पर भी बल दिया। इसका अभिप्राय है विशाल पैमाने के उद्योगों के स्थान पर लघु कुटीर उद्योगों की स्थापना। उनका कहना था कि औद्योगीकरण की प्रवृत्ति ने ही साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद को बढ़ावा दिया है क्योंकि औद्योगिक राष्ट्रों को बड़ी मात्रा में कच्चा माल प्राप्त करने व तैयार माल बेचने के लिए विशाल बाजारों की आवश्यकता होती है। गांधीजी केवल उन्हीं मशीनों के विरुद्ध थे जिन के उपयोग से परिश्रम को बचाने की चेष्टा की जाती है जिसका परिणाम यह होता है कि अंत में लाखों व्यक्ति खुली सड़कों पर घूमते हैं और भुखमरी की समस्या उत्पन्न हो जाती है। उन्होंने देखा कि जो लाखों लोग बेरोजगार घूम रहे हैं, मशीनीकरण इसका मूल कारण है। बेरोजगार लोगों की जनसंख्या को काम दिलाना भी उन्हें उतना ही आवश्यक लगा जितना कि स्वराज प्राप्त करना। कुटीर उद्योग धंधों से गांधी जी का अभिप्राय था ग्रामोद्योग। उनके अनुसार दैनिक आवश्यकताओं की वस्तुएं गांव में ही तैयार होनी चाहिए जहां तक हो सके गांव आत्मनिर्भर बने और नगरों पर कम से कम आश्रित हों। इससे गांव की उन्नति होगी व प्रत्येक व्यक्ति को रोजगार मिल जाएगा। देश में औद्योगिक पूंजीवाद से उत्पन्न होने वाली प्रतियोगिता समाप्त हो जाएगी। देश में शांति व्यवस्था स्थापित हो जाएगी। इसमें उत्पादित की जाने वाली वस्तुओं का स्वामी स्वयं श्रमिक होगा, अतः शोषण का अंत हो जाएगा। इसलिए शोषण का अंत करने के लिए कुटीर उद्योग धंधे ही सर्वोत्तम साधन है। छोटे उद्योगों के द्वारा वर्तमान युग के दो और बड़े खतरों को बहुत कुछ घटाया या टाला जा सकता है और यह खतरे हैं : व्यापक औद्योगिक प्रदूषण और परमाणु अस्त्रों द्वारा सर्वनाश की संभावनाएं।

वैश्वीकरण के फलस्वरुप ग्रामीण और शहरी जीवन में अंतर काफी बढ़ गया है। एक और शहर जहां समृद्ध हुए हैं वहीं कृषि व्यवस्था में ह्रास होने के कारण ग्रामीण जीवन स्तर में भी ह्रास हुआ है। मशीनीकरण ने गांधी जी के परिकल्पित ग्राम स्वराज के साथ–साथ गांव में सदियों से चल रहे हस्त उद्योगों को भी तहस–नहस करके रख दिया है। छोटे उद्योगों की जगह बड़ी कंपनियों और फैक्ट्रियों ने ले ली है और गांव आत्मनिर्भर होने की जगह उद्योग विहीन हो गए हैं और वहां के युवा बेरोजगारी की मार झेल रहे हैं। गांधी जी का ग्राम स्वराज का विचार गांव को आत्मनिर्भर बनाने के संबंध में ही है। गांधी जी कहते थे कि भारत गांव में रहता है शहरों में नहीं।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए गांधीजी ने विभिन्न स्वदेशी उद्योगों के विकास पर बल दिया। स्वदेशी के सामाजिक पहलू पर जोर देते हुए गांधी जी ने देश भर में खादी को अपनाने का प्रचार किया। चरखा से सूत कातना और सूत से कपड़ा बनाना खादी का काम है। खादी अर्थव्यवस्था की पहली सीढ़ी है क्योंकि जो रुपया भारत से बाहर चला जाता है उसको हम देश के विकास में लगा दे सकते हैं। स्वावलंबन गांधी नीति का मूल मंत्र था।

स्वराज के साथ–साथ गांधी जी ने सर्वोदय के आदर्श पर भी विशेष बल दिया। जिसका अर्थ है सबका उदय या उत्थान। महात्मा गांधी ने इस शब्द का प्रयोग ऐसी जीवन पद्धति या विचारधारा का संकेत देने के लिए किया जो सत्य, अहिंसा पर आधारित हो तथा जिसमें किसी का किसी के प्रति विरोध ना हो। वैश्वीकरण की वजह से जो आजकल चारों तरफ प्रतिस्पर्धा का माहौल बना हुआ है उसे सर्वोदय के द्वारा प्रेम एवं सद्भावपूर्ण माहौल में बदला जा सकता है।

वैश्वीकरण के फलस्वरुप भारत में उपभोक्तावादी संस्कृति को बढ़ावा मिला है। अंग्रेजी रहन–सहन, वेशभूषा हमारे दैनिक जीवन का अंग बनते जा रहे हैं। हम उपभोक्तावादी और व्यक्तिवादी बनते जा रहे हैं। वैश्वीकरण के फलस्वरुप हमारे यहां संयुक्त परिवार, विवाह जैसी संस्थाओं का ह्रास होता जा रहा है। जहां तक पाश्चात्य सभ्यता का संबंध है, यह मानना कि गांधी जी इसके विरोधी थे भ्रांतिपूर्ण है। उनके लिए सभ्यता कोई आयात निर्यात

की वस्तु नहीं है बल्कि यह तो स्वाभाविक रूप से किसी समाज में उपजती है और पुष्पित व पल्लवित होती है। लेकिन उन्होंने भारतीय सभ्यता की श्रेष्ठता में विश्वास व्यक्त किया जो सच है। उन्होंने पाश्चात्य सभ्यता व संस्कृति को पूर्ण रूप से नहीं नकारा वरन् वे उसमें निहित भौतिकवाद, उपभोक्तावाद, अंध प्रतियोगिता व अमानवीय औद्योगिक संस्कृति के विरुद्ध थे।

यह बात किसी से छिपी नहीं है कि वैश्वीकरण ने पर्यावरण को बुरी तरह से प्रभावित किया है। गांधी जी ने कुटीर उद्योग धंधों का समर्थन किया था और बड़े उद्योगों का विरोध किया था। आज विश्व भर में औद्योगिकरण को पर्यावरण के लिए हानिकारक माना जा रहा है। इसमें औद्योगीकरण के साथ साथ मानवीय एवं प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन भी शामिल हैं। आज गांधीजी के अनुरूप परंपरागत विकास, तकनीक अथवा सतत विकास पर बल दिया जा रहा है। गांधी जी का कहना था कि ''धरती के पास सभी की जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त संसाधन है किंतु किसी के लालच को पूरा करने के लिए नहीं''। गांधीजी का अपरिग्रह का सिद्धांत यही शिक्षा देता है कि व्यक्ति को सामाजिक संपदा से उतना ही ग्रहण करना चाहिए जितना उसकी आवश्यकता की पूर्ति के लिए अनिवार्य हो। इसमें लालसा, विलासिता, अपव्यय की कोई गुंजाइश नहीं है और अगर वह अपनी आवश्यकताओं पर लगाम नहीं लगाएगा तो वह धरती पर दुर्लभ संसाधनों का अभाव पैदा कर देता है जिसका परिणाम आज हमारे सामने पर्यावरण विघटन के रूप में है जो कि इस समय की ज्वलंत समस्याओं में से एक है।

निष्कर्ष

इस प्रकार हम कह सकते हैं गांधीजी के आर्थिक विचारों में मानवता सर्वोपरि स्थान ग्रहण करती है। सकल घरेलू उत्पाद तथा विकास से संबंधित सूचकांक तभी मायने रखते हैं जब उनसे जनकल्याण का लक्ष्य पूरा हो रहा हो। गुन्नार मिर्डल का कहना है कि ''भारत के उद्धार और आर्थिक प्रगति का एकमात्र रास्ता गांधीवाद है''। 2 अक्टूबर को संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा अहिंसा दिवस घोषित करना विश्व स्तर पर गांधीवाद की प्रासंगिकता को और भी अधिक प्रासंगिक बना देता है क्योंकि गांधीजी ने मनुष्य के पारस्परिक संबंधों का आधार धन को नहीं वरन प्रेम को बनाया।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. डा. ए. पी. अवस्थी (2005–06). भारतीय राजनीतिक विचारक, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा।
2. डा. प्रभात कुमार सिंह, गांधी विचारधारा (राजनीतिक सामाजिक एवं आर्थिक क्षेत्र), कम्पटीशन स्पेक्ट्रम, इलाहाबाद।
3. डा. अरूणोदय बाजपेयी (2012). समकालीन विश्व एवं भारत – प्रमुख मुद्दे और चुनौतियां, पीयरसन पब्लिकेशन्स, नोएडा।
4. डा. अमरेश्वर अवस्थी एवं रामकुमार अवस्थी (1992). आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिंतन, रिसर्च पब्लिकेशन्स, जयपुर।
5. डा. ओम प्रकाश गाबा (2003). भारतीय राजनीतिक विचारक, मयूर पेपरबैक्स, नोएडा।
6. डा. गंगादत्त तिवारी (2000). आधुनिक राजनीतिक विचारधारायें, मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ।